सुशील कुमार के काव्य संग्रह *नई संस्कृति का भ्रूण* में सांस्कृतिक चित्रण सुशील कुमार *शीलू* जीवन परिचय

शोधपत्र-हिन्दी

*संगीता राव

हरियाणा की पावन धरा पर जन्म लेने वाले 'सुशील कुमार' का नाम साहित्यकारों में सर्वोपरि है। महान् साहित्यकार 'सुशील कुमार' का जन्म 23 अगस्त सन् 1976 को हरियाणा में नारनौल तहसील के अन्तर्गत गांव मंडलाना में हुआ। इनके पिता का नाम श्री हरफूल सिंह कलानियां है। सुशील कुमार जी की माता का नाम श्रीमती केसरी देवी है।

शिक्षा–दीक्षाः—युवा साहित्यकार 'सुशील कुमार जी' प्रारम्भिक शिक्षा गांव सिलारपुर महता स्थित प्राथमिक पाठशाला में हुई। 'शीलू' जी ने दसवीं की परीक्षा राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, निवाजनगर से उत्तीर्ण की। इसके पश्चात् 10+2 की परीक्षा हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड से उत्ततीर्ण की तथा डी.एड (जे.बी.टी) ऐलनाबाद (सिरसा) से उत्तीर्ण की। उपरोक्त शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् इन्होंने अध्यापक के पद को ग्रहण किया।

व्यवसाय :—'सुशील कुमार जी' ने अजमेर रेलवे में प्राथमिक शिक्षक के लिए परीक्षा दी और प्रथम प्रयास में ही इनका चयन शिक्षक पद पर हो गया। दो–तीन माह इस पद पर सेवा कार्य करने के पश्चात् चंडीगढ़ प्रशासन में प्राथमिक शिक्षक पद ग्रहण किया। परन्तु उक्त पद ग्रहण करने के दो दिन पश्चात् ही हरियाणा शिक्षा विभाग में जे. बी.टी. अध्यापक के पद पर चयन हो गया। अक्तूबर 2000 में इन्होंने राजकीय प्राथमिक पाठशाला, सिलारपुर महता में प्राथमिक शिक्षक के रूप में पद ग्रहण किया। गर्व की बात यह है कि जहाँ 'शीलू' जी ने स्वयं प्राथमिक शिक्षा ग्रहण की वहीं से उनकी व्यवसाय की नींव रखी गयी। सन् 2000 से आज तक 'शीलू' जी इसी पाठशाला में कार्यरत है।

साहित्यिक प्रेरणा :—किसी ने ठीक ही कहा है *'होनहार बिरवान के होत चिकने पात'* यह उक्ति सुशील कुमार जी पर पूरी तरह चरितार्थ होती है। सुशील कुमार जी का साहित्यांकुर उस समय फूटा जब ये तीसरी कक्षा में पढ़ते थे। 'शीलू जी' समाचार पत्रों में प्रकाशित रचनाएं पढ़ते थे। इसके साथ–साथ रेड़ियो से प्रसारित साहित्यिक रचना सुनने के भी शौकीन थे। साहित्य लेखन कार्य इन्होंने कॉलेज की पत्रिका 'त्रिधारा' से प्रभावित होकर शुरू किया जिसमें इनकी रचना भी छपी।

पुरस्कार :—साहित्यकार 'सुशील कुमार' ने हिन्दी गद्य व पद्य दोनों विधाओं पर लेखनी चलाई। विद्यालयी स्तर में मेधावी रहे 'शीलु' जी ने विद्यालय कालेज व शिक्षण संस्थाओं में अनेक साहित्यिक व सांस्कृतिक गतिविधियों में अग्रणी रहे। इन्हें अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया जाता रहा है, जैसे :—1. विद्यालय स्तर पर कविता पाठ व कविता लेखन में पुरस्कार। 2. अध्यापक शिक्षण प्रशिक्षण संस्थान ऐलनाबाद द्वारा 'मिस्टर ईमानदार' का पुरस्कार युवा साहित्यकार सुशील कुमार 'तरूण साहित्य मंच' के संस्थापक सदस्य है तथा डाक्टर अम्बेडकर सामाजिक एवम् शैक्षिक मिशन के भी सक्रिय सदस्य हैं।

नई संस्कृति का भ्रूण :—'सुशील कुमार' जी ने 'नई संस्कृति का भ्रूण' काव्य संग्रह में पुरानी हिन्दु संस्कृति को एक दिवास्वपन की तरह माना है। जिस संस्कृति को हिन्दु जाति 'राष्ट्रवाद' कहती है इस संस्कृति ने ही देश में जाति धर्म आदि के नाम पर साम्प्रदायिकता को बढ़ावा दिया है। कवि इस रूढ़िवादी संस्कृति से मुक्ति चाहता है और नये उत्साह व भविष्य के सपने के साथ कवि 'नई संस्कृति का भ्रूण' की रचना करता है। जिसमें कवि जातिप्रथा, साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार आदि बुराईयों के प्रति विद्रोह करता है। लेकिन कवि इन सामाजिक अव्यवस्था के प्रति निराश न होकर प्रेम व संघर्ष के द्वारा नई संस्कृति स्थापित करना चाहता है। जबकि 'मंजिल का रास्ता', 'धर्मरहित मानव', 'नये सूरज की तलाश', 'अब विद्रोह जरूरी है', 'नई संस्कृति का भ्रूण', 'कोई पूरा कर दे मेरा सपना' आदि में कवि की सृजनात्मक शक्ति का चित्रण है। कवि इन कविताओं में मुक्ति की नई डगर खोजता है। इन कविताओं में युवाओं के लिए उज्जवल भविष्य के लिए प्रेरणा निहित है।

सुशील कुमार के काव्य 'नई संस्कृति का भ्रूण'

* अतिथि प्राध्यापक, अहीर कॉलेज, रेवाड़ी, हरियाणा

में सांस्कृतिक चित्रण :–

सांस्कृतिक चित्रण –संस्कृति–संस्कृति शब्द (सम्+कृ+क्तिन) अर्थात् सम + उपसर्गपूर्वक 'कृ' धातु से भूषण–अर्थ से सुट् का आ गये करके 'क्तिन्' प्रत्यय करने से बनता है। इसका अर्थ होता है – भूषण भूत सम्यक कृति इसलिए भूषणभूत सम्यक कृति या चेष्टा ही संस्कृति कही जा सकती है।[1] इस प्रकार भूषण भूत सम्यक कृतियों का सम्पूर्ण क्षेत्र संस्कृति का क्षेत्र है।[2] संस्कृति शब्द सम् उपसर्ग के साथ संस्कृत की (डु) कृ (ञ) धातु से बनता है। जिसका मूल अर्थ साफ या परिष्कृत करना है।[3]मनुष्य के लौकिक–परलौकिक सर्वाभ्युदय के अनुकूल आचार–विचार ही संस्कृति है।[4] पं. जवाहर लाल नेहरू–संसार भर में जो भी सर्वोत्तम बातें जानी या कही गयी, उनसे अपने को परिचित करना संस्कृति है।[5] संस्कृति का सम्बन्ध मानव के भौतिक, आध्यात्मिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक, साहित्यिक, दार्शनिक कलात्मक आदि सभी प्रकार के महत्वपूर्ण विकासों एवम् जीवन के विविध पहलूओं से है।[6] किसी जाति विशेष की आदर्श परम्पराओं को संस्कृति कहते हैं। सांस्कृतिक चेतना उस बिगुल की तरह है जिसे सुनकर भय, चिंता, तनाव, निराशा के भाव दूर भाग जाते हैं तथा उनकी जगह निर्भयता, उत्साह, साहस, स्फूर्ति व उमंग मनुष्य के अंदर भर जाती है। अतः जातीय आदर्शों से युक्त प्रेरणा को ही सांस्कृतिक चेतना कहा जाता है। 'कोख का संताप' में कवि 'सुशील जी' समाज के दुष्ट व देशद्रोहियों के प्रति विद्रोह के भाव व्यक्त करता है–

तुम/कितने हष्ट पुष्ट हो/कितने दुष्ट हो/बिस्तर पर पड़ी भारत माँ/स्थिर आँखों से तुम्हें देखती है, रोती है/और अपनी कोख को कोसती है।[7]

संघर्ष और विद्रोह 'सुशील कुमार' की कविताओं का प्रमुख स्वर रहा है। 'शीलू' जी ने पुरानी रूढ़िवादी परम्पराओं को तोड़कर नई संस्कृति विकसित करने का प्रण लेते है। 'सुशील कुमार जी' की नई संस्कृति एक तरह से श्रमण संस्कृति ही है जो देश के उपेक्षित व शोषित पिछड़े वर्ग की अपनी संस्कृति है।

'शीलू' जी 'नये सूरज की तलाश में संस्कृति व समाज को सुन्दर रूप सामने लाते हैं :–

नई जमीं होगी/नया आसमां होगा/प्रकृति की गोद में उगेंगे प्रीताकुंर/मुस्कुरायेंगे मानवता के पुष्प/प्रत्येक हृदय निवास पर/आने ही वाला यह मधुमास है। मुझे क्षितिज पर नये सूरज की तलाश है......... ।[8]

'शीलू' जी अपसंस्कृति के ध्वजाधारियों के सामने चुप न रहकर उनका विरोध करते हैं : निश्शंक अमर्यादित विद्रोह/परम्पराओं की हत्या और मैं/अपशिष्ट सामग्री से/कर रहा हूं विकसित/नई संस्कृति का भ्रूण।[9]

'शीलू' जी संस्कृति के आदर्श को जनता के सामने प्रकट किया। उन्होंने अपनी कविता 'कोई पूरा कर दे मेरा सपना' में अनाथ बच्चों के प्रति भावनाएं प्रकट की हैः–

सपने का सार सिर्फ इतना है/कि गंगा के निश्छल तट पर/बना लिया मैंने प्रेमाश्रम/ले आया हूँ उसमें कुछ अनाथ बच्चे/और प्रत्यारोपित कर रहा हूँ उनमें मानवी संस्कार/जिससे आने वाले वक्त में/मुक्त हो आदमी जाति–धर्म की बेड़ियों से।[10]

'खण्डहर। कविता में कवि की धारणा है कि नये समाज का निर्माण नई विचार धाराओं के अनुसार होना चाहिए। पुरानी परम्पराओं पर नहीं।

कमजोर नींव पर/नई इमारत खड़ी करना चाहता है/नहीं जानता/बदल चुका है जमाना/और नई सोच के मुताबिक/बदल चुका है।[11]/'आग' कविता में प्रकट किया हैं–'रिश्तों की दृढ़ता के लिए/जरूरी है उनमें/उष्मा का संचार।[12]

काव्यकार अपनी प्राचीन संस्कृति व उसकी गरिमा पर गर्व करता है। जैसे–साक्षी है इतिहास हमीं पहले जागे हैं। मानव जीवन के सभी अंगों को नियमित करने वाले सिद्धान्त ही धर्म की व्याख्या का विषय होते हैं। भारत देश में धर्म जीवन के सभी क्रिया कलापों पर छाया हुआ है। धर्म का सम्बन्ध अर्थ, काम व मोक्ष से भी है। मनुष्य के जन्म से मृत्यु तक सभी क्रियाकलाप धर्म से ही नियंत्रित व क्रियान्वित होते हैं। भारत में अनेक धर्मों का उदय हुआ। अनेक सामाजिक, धार्मिक सुधार आन्दोलनों ने धर्म की रूढ़िग्रस्तता से समाज का उद्धार किया है। कवि 'धर्म रहित मानव' कविता में कल्पना करता है कि धर्म रहित मानव का जीवन कैसा हो सकता है। 'भाईचारा' 'पहचान' तथा 'कोई पूरा कर दे मेरा सपना' नामक कविताओं में धर्म व साम्प्रदायिकता के खिलाफ आवाज उठाने का प्रयास किया है।

'हमारा विचार है/जनता लाचार है/भगवान, धर्म, जाति के नाम पर/ हम 'लडाते हैं/वे लड़ते हैं/वे लड़ते हैं/ईमानदार ताकतों को दूर रखने के लिए गठबंधन कृतसंकल्प है।[13] धर्म और नैतिकता में पहले मानवीयता का संस्पर्श होना आवश्यक है। जिससे व्यक्ति और व्यक्ति के बीच की दीवारें समाप्त हो जाए। व्यक्ति समाज में नैतिक धार्मिक मूल्यों का पालन करें।

'साम्प्रदायिकता' से अभिप्राय केवल अपने सम्प्रदाय से लगाव रखना तथा केवल अपने सम्प्रदाय की रक्षा व उत्थान से ही सम्बन्ध रखना और इसके साथ–साथ अन्य सम्प्रदायों

की उपेक्षा करना। साम्प्रदायिकता के प्रभाव को 'शीलू' जी ने अनुभव किया। 'शीलू' जी ने 'पहचान' कविता में अपने इस अनुभव को जनता के समक्ष प्रकट किया है–

हिन्दु–मुसलमान समझकर/और मुसलमान हिन्दू समझकर/मुझे मार डालेंगे/सिक्ख होने पर/आतंकवादी समझा जाऊँगा/अब/धर्म की यही पहचान शेष है।[14]

धर्म के नाम पर दलों की स्थापन की जाती है। साम्प्रदायिक दंगो में मेहनतकश मजदूर वर्ग को हानि पहुँचती है। साम्प्रदायिकता के कारण देश विघटित होता है और भाई–भाई का दुश्मन बन जाता है। राजनीतिज्ञ धर्म का इस्तेमाल सत्ता प्राप्ति के लिए करते है। चाहे इससे राष्ट्र का कितना ही नुकसान हो।

'शीलू' जी की कविताओं में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना विद्यमान है। 'भाईचारा' कविता में उन्होंने आधुनिक भाईचारे के नये अर्थ को प्रस्तुत किया है–

हिन्दू–मुस्लिम–सिक्ख–इसाई/आपस में सब भाई–भाई/का नया अर्थ आया/हिन्दू–हिन्दू/मुस्लिम–मुस्लिम/सिक्ख–सिक्ख/और/ईसाई–ईसाई/आपस में सब भाई–भाई।[15]

प्रजातंत्र में विरोधी दल भी समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विरोधी दल सत्तारूढ़ दल पर अंकुश का कार्य करता है। सत्तापक्ष व विपक्ष एक दूसरे को नीचा दिखाने का प्रयत्न करते रहते हैं। सत्तापक्ष में दोष निकालना उसे गिराने व स्वयं के दल को चढ़ाने की कोशिश करते हैं। विरोधी दल अपने प्रतिद्वंदी को बदनाम करने के लिए भी अनेक हथकंडे अपनाता है। 'दबा दोगे विरोध के दुर्बल स्वर/राष्ट्रवाद की दहाड़ से/लेकिन जब कोई/हमारी छाती या पीठ पर मारेगा पंजा/रहोगे गुम सुम/किसी विश्व शक्ति के सामने /हिलाओगे दुम।[16] सत्तापक्ष की स्वेच्छारिता एवम दमन की प्रवृति के सामने जनता का विरोध असफलत हो जाता है। भ्रष्टाचार शब्द 'भ्रष्ट' अर्थात् गलत व निकृष्ट तथा 'आचार' का तात्पर्य है 'आचरण' । इस प्रकार भ्रष्टाचार का अर्थ हुआ गलत या निकृष्ट आचरण।/भ्रष्टाचार के अनेक रूप माने गये है जैसेः– रिश्वतखोरी, कालाबाजार, जनता के धन को हड़पना। समाजद्रोही तत्वों को सरकार द्वारा आश्रय देना आदि।

लेखक समाज का संवेदनशील प्राणी होता है। इसलिए वह सामाजिक विकृतियों को खुली आँखों से देखता है और अपनी रचनाओं के माध्यम से इन भ्रष्टाचारो के प्रति आक्रोश प्रकट करता है। भारतीय राजनीति भी भ्रष्टाचार की जननी है। यहाँ भी अनेक भ्रष्ट राजनेताओं द्वारा अनेक घोटाले किये जाते हैं।

गठबंधन कविता में इस भ्रष्टाचारिता को प्रकट किया है–

आजकल सर्वत्र भ्रष्टाचार है
X X X X
बेईमानी के औधोगिकरण के अच्छे आसार हैं।
और मुझमें बेईमानी का उद्याग लगा जाओ
मुझमें घोटालो के बीज अंकुरित हो चुके हैं।[17]

निष्कर्षः–सुशील कुमार 'शीलू' जी एक युवा कलाकार है 'शीलू' जी के पास समाज को देखने की नयी दृष्टि है। कवि का अपने समाज के साथ आत्मीय सम्बन्ध है। कवि समाज के उत्पीड़ित–शोषित समाज से जुड़कर समाज संवेदना को रचनाओं में उभारता है। 'सुशील कुमार' इस बात से परिचित है कि सामाजिक अस्मिता की पहचान जाति, धर्म के आधार पर होती है जो आगे चलकर सम्प्रदाय का रूप धारण कर लेती है। साम्प्रदायिकता में ध र्म का मानव विरोधी चेहरा सामने आता है। 'शीलू' जी ने राष्ट्रीय चेतना के अर्न्तगत अपनी रचनाओं में जातिवाद, उत्पीड़ित व उपेक्षित वर्ग का यर्थाथ चित्रण किया है और अमानवीय व क्रूर जाति प्रथा के खिलाफ विद्रोह प्रकट किया। उनकी 'अछूत', 'नयी संस्कृति का भ्रूण', 'कोरव का संताप', धर्म रहित मानव, 'विवशता और पहचान आदि कविताएं जीवन का यर्थाथ चित्र प्रस्तुत करती है। इन कविताओं में जीवन की सहज अभिव्यक्ति है। 'नये सूरज की तलाश' व 'मंजिल का रास्ता' कविता में कवि की सृजनात्मक क्षमता व उज्ज्वल भविष्य का संकेत है और युवाओं के लिए भविष्य के लिए प्रेरणा निहित है। सुशील कुमार 'शीलू' के काव्य के कथ्यगत– वैशिष्ट्य का अध्ययन करने पर इस निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है कवि ने समाज में व्याप्त कुरीतियों, अन्धविश्वासों, साम्प्रदायिकता, जातिवाद, नारी शोषण आदि से सम्बन्धित समस्याओं को अपनी कविताओं का आधार बनाया।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. संस्कृत हिन्दी कोष, पृ. 134 2. कल्याण, हिन्दू संस्कृति, अंक पृ. 14 3. हिन्दी साहित्य कोष भाग–1, पृ. 712 4. कल्याण हिन्दु संस्कृति, अंक पृ. 24 5. संस्कृति के चार अध्याय, प्रस्तावना पृ. 16 6. कामायनी में काव्य संस्कृति और दर्शन पृ. 269 7. सुशील कुमार 'शीलू' नई संस्कृति का भ्रूण पृ. 77 8. 'नई संस्कृति का भ्रूण' पृ. 50 9. वही पृ. 77 10. सुशील कुमार 'शीलू' नई संस्कृति का भ्रूण–पृ.–87 11. वही पृ. 86 12. वही –पृ. –81 13. सुशील कुमार 'शीलू' 'गठबन्धन' पृ.–15 14. सुशील कुमार 'शीलू', 'नई संस्कृति का भ्रूण' पृ.–57 15. वही, पृ. 20 16. वही, पृ. 73 17. सुशील कुमार 'शीलू' 'गठबन्धन' पृ. 14